अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2024) दिनांक : 21.12.2024

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भिक्षु दृष्टांत–40

प्र. 1 किन्हीं तेरह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 13

(क) कोई साधुपन नहीं पालता और साधु का नाम धराता है। वह साधु किस दृष्टि से कहलाता है?

(ख) साधु द्वारा नदी पार करने के साथ फूलों के दृष्टांत की तुलना क्यों नहीं हो सकती?

(ग) भीखणजी कहते थे, आत्म प्रदेशों में प्रकंपन हुए बिना निर्जरा नहीं होती। यह कथन किसने किससे कहा?

(घ) 'तूं एक मुहूर्त का संवर कर।' स्वामी ने यह प्रेरणा क्यों दी?

(ड़) पात्रों को दो रंगों से क्यों रंगा जाता है?

(च) हेमजी स्वामी ने यावज्जीवन अब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर स्वामीजी को किस वस्तु का दान दिया?

(छ) मुनि अखैराम जी संघ से पृथक कैसे व कहां हुए?

(ज) 'तुम सम्यक्त्व को नहीं रख सकोगे।' स्वामीजी का यह कथन सत्य कैसे हुआ?

(झ) स्वामीजी कड़े दृष्टांतों द्वारा कौन सा रोग मिटाना चाहते थे?

(ञ) श्वेताम्बर परंपरा में साधु के लिए कितने व कौन से वस्त्रों का विधान है?

(ट) किसी ने कहा–भीखणजी भी हमें कहते हैं, तुम्हें यह दोष लगता है, तुम्हें यह दोष लगता है। तब सेठ हरजीमल जी ने क्या कहा?

(ठ) वैरागी की वाणी सुनने से वैराग्य उत्पन्न होता है। इस पर स्वामीजी ने कौन सा दृष्टांत दिया?

(ड) कस्सी और कुदाल चलती है, तब किस काय के जीवों की हिंसा होती है?

(ढ) इस हिसाब से तुम्हारा जन्म व्यर्थ हो गया। स्वामीजी ने यह कथन किससे और क्यों कहा?

(ण) वर्तमान काल में सावद्य दान के विषय में मौन क्यों रहना चाहिए?

प्र. 2 किन्हीं दो घटना प्रसंगों को 100 से 150 शब्दों में लिखें– 12

(क) जितना पचा सके उतना दो।

(ख) ऐसे हैं भीखणजी कला कुशल।

(ग) मान्यता एक स्पर्शना भिन्न।

(घ) शंका है तो चर्चा करें।

प्र. 3 किसी एक प्रश्न का उत्तर विस्तार से दीजिये– 15

(क) स्वामीजी द्वारा प्रदत्त जीव-दया के मौलिक दृष्टांतों का उल्लेख करें।

(ख) 'हम ऐसा न्याय नहीं करेंगे।' इस कथन को स्पष्ट करते हुए सम्पूर्ण घटनाक्रम विस्तारपूर्वक लिखें।

महासती सरदारां–15

प्र. 4 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए– 3

(क) आचारांग सूत्र के अनुसार सफल प्रवचनकार में कौन-कौन सी अर्हताएं होनी चाहिए?

(ख) 'लाभंतरे जीवियवूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावघंसी' इस आगम वाणी का अर्थ क्या है?

(ग) आगम पाठों द्वारा महाव्रतों की आलोयणा करवा जयाचार्य ने सरदारां जी को कौन सी गाथाएं सुनाई?

(घ) कायसिद्धि के अभ्यास द्वारा सरदारां जी ने अपने आपको कैसे साधा?

(ड़) जैन संघ में पांच वर्ष की दीक्षा पर्याय के लिए शास्त्र अध्ययन का क्या विधान है?

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 12

(क) गुण गिरवा उद्यमी धणां, च्यार तीर्थ चित चंग।
सुमति सामापै महासती, वचनामृत जल गंग।।
जयाचार्य रचित इस दोहे को व्याख्यायित करें।

(ख) सरदारां जी की तपस्या का उल्लेख करें।

(ग) महासती सरदारां जी के व्यवस्था कौशल का वर्णन करें।

अनुकंपा की चौपाई–30

प्र. 6 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 5

(क) प्रदेशी राजा ने अपनी रूढ़ि पकड़ कैसे छोड़ी?

(ख) किस सूत्र में बताया गया है?–असंयति के जीने और मरने की इच्छा करना राग-द्वेष है।

(ग) तिर्यक लोक के मालिक कौन है तथा उनका आदेश कहां तक चलता है?

(घ) साधु सांसारिक उपकार की सराहना नहीं करते, फिर भी सांसारिक उपकार क्यों किए जाते हैं?

(ड़) छद्मस्थ की पहचान के मुख्य बिन्दु कौन से हैं?

(च) जीव के बोधि-बीज का नाश कब होता है?

(छ) अचित्त आहार कितने प्रकार का होता है?

प्र. 7 प्राण, भूत, जीव और सत्व की हिंसा नहीं करनी चाहिए। विभिन्न उद्धरणों द्वारा आगम वाणी को स्पष्ट करें। 10

अथवा

संसार और मोक्ष सम्बंधी उपकारों के स्वरूप व प्रकारों का वर्णन करते हुए स्पष्ट करें कि निर्जरा के लिए कौन सा उपकार श्रेष्ठ है?

प्र. 8 किन्हीं दो पद्यों की सप्रसंग व्याख्या करें– 15

(क) जीव जीवे काल अनाद रो, मरे तेहनी हो परजा पलटी जांण।
संवर निरजरा तो न्यारा कह्या, ते ले जावे हो जीव नें निरवांण।।

(ख) रोगी गरढा गिलांण साधु री वीयावच, साधु न करे तो श्री जिण आगना बारे।
महा मोहणी कर्म तणों बंध पाडे, इह लोक ने परलोक दोनूं बिगाड़े।।

(ग) अकाले जगत ने मरतो देखीयो रे, पिण आडा न दीघा भगवंत हाथ रे।
धर्म हुवे तो भगवंत आधो नहीं काढ़ता रे, निश्चेइ तिरण तारण जगनाथ रे।।

(घ) असंजती जीवां रो जीवणो, ते सावज्ज जीतब साख्यात जी।
तिणनें देवे ते सावज्ज दांन छै, तिणमे धर्म नहीं अंसमात जी।।

भिक्षु वाणी–15

प्र. 9 कोई दो पद्यों की भावार्थ सहित पूर्ति करें– 6

(क) जेहने.....खाय।

(ख) बांध्यो.....सीखावे।

(ग) ग्यान रूप.....चीर।

(घ) उझिया.....आब।

प्र. 10 किन्हीं तीन विषयों पर पद्य लिखें– 9

(क) असाधु।

(ख) उपदेष्टा।

(ग) धर्म।

(घ) मिश्रधर्म।